देसिल बयना, सबजन मिट्ठा

डॉ. संध्या कुमारी

माध्यमिक शिक्षिका

उत्क्रमित मध्य विद्यालय, विशुनपुर सुमेर नयाटोला, कांटी.

प्रस्तावना :--

'देसिल बयना' शब्द से तात्पर्य है अपनी देसी भाषा, वस्तुएँ, सामग्री या रचनाओं का समावेश । दूसरों की वस्तुएँ, उनकी भाषाएँ, कला, संस्कृति आदि लुभावनी तो होतीं हैं किन्तु संतुष्टि केवल स्वयं की वस्तुएँ, अपनी मातृभाषा, अपनी कला, संस्कृति आदि इन्हीं से प्राप्त होती है ।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, इससे तात्पर्य यह है कि साहित्य की रचना जिस किसी भी कालखंड में हुई हो वह उस कालखंड के समसामयिक समाज की वास्तविकताओं को एक दर्पण की भांति प्रस्तुत करता है । एक कवि या लेखक अपने रचनाओं में उस काल के समाज, संस्कृति, धर्म, रहन-सहन आदि को दर्शाने का प्रयास करता है । कवि की कविता या लेखक का साहित्य समाज का वह आईना होता है जिसमें हम अपना बीता हुआ कल देख सकते हैं तथा अपने आज का मूल्यांकन कर आने वाले भविष्य को बेहतर बनाने की ओर अग्रसर हो सकते हैं ।

प्रस्तुतीकरण :--

मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापति का प्रादुर्भाव भारत के पावन अंचल मिथिला के क्षितिज पर उस समय हुआ जब उत्तरभारत का मानव समाज अपने जीवन द्वंद्व के बीच व्याकुल हो रहा था । विद्यापति ने, एक मधुर फुहार की तरह, समाज को शीतलता प्रदान की । मंद लहरों के झोंके की भांति, इनकी रचनाएँ, राजा की गगनचुंबी अटालिकाओं से लेकर गरीबों की टूटी हुई फूस की झोपड़ी तक में उनके पद व्याप्त है ।

जब समस्त आभिजात्य वर्ग संस्कृत में काव्य रचना कर संतुष्टि पा रहा था, मिथिला के राजकवि विद्यापति ने भी संस्कृत भाषा में अनेक रचनाएँ की परंतु इनसे वह संतुष्टि का भाव नहीं पा रहे थे । तब उन्हें लगा कि सामान्य जन तक अपनी पहुँच बनाने के लिए इस स्फटिक शिला से नीचे उतरकर कुश की चटाई पे बैठना होगा और उन्होंने यह बताया की "देसिल बयना सबजन मिट्ठा" अर्थात अपनी रचनाओं को देसी भाषा में लिखना प्रारम्भ किया । इतना ही नहीं उन्होंने अपनी काव्यभाषा को बालचन्द्रमा की तरह सुंदर माना –

बालचन्द्र विजापई भाषा ।

दुहु नहीं लग्गई दुज्जन हासा ।।

ओ परमेसर हर सिर सोहई ।

इ निश्चय नाअर मन मोहई ।।

उस समय संस्कृत एक समृद्ध भाषा के रूप मे स्थापित थी किन्तु यह जन भाषा नही थी वरन, विद्वत जन की भाषा तक ही सीमित थी । ऐसे मे, विद्यापति ने, जन भाषा का उपयोग किया और अधिकांश पुस्तकों की रचना मैथली एवं अवहट

मे किया। फलतः, जन समुदाय के लिए इसका अध्ययन सरल हो गया और खास कर पदावली तो मिथिला भाषी के लबों पर ही रहती थी।

हिन्दी जगत मे बहुतेरे ऐसे साहित्यकार हुए, जिनकी पुस्तकों मे ऐतिहासिकता की कमी नहीं है, जैसे - रामवृक्ष बेनीपुरी, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर, इत्यादि। दरबारी कवियों मे भी कालीदास, चंद वरदाई , बान भट्ट, आदि की रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं। विद्यापति भी ऐतिहासिकता की परिधि में अपनी रचनाओं को ढालने का प्रयास किया है। विद्यापति (1360 ई॰ से 1447 ई॰) लोकभाषा के प्रथम शास्त्रीय महाकवि हुये, जिनकी पदावली को छोड़कर अन्य पुस्तकों में जैसे 'कीर्तिलता', 'कीर्ति पताका', 'पुरुषपरीक्षा', 'दानवाक्यावली', 'विभागसार' आदि में उन्होंने उस समय के समाज, संस्कृति, अपने राजा की राजनैतिक व्यवस्था, उनके ऐश्वर्य, शौर्य, इत्यादि को कुछ इस तरह समाहित किया कि वह अपने आप में अनूठा एवं अविस्मरणीय है। भूपरिक्रमा के द्वारा भौगोलिक ज्ञान का परिचय दिया।

विद्यापति ने अपनी रचनाओं को कुछ इस तरह प्रस्तुत करने का प्रयास किया कि जिस को साधारण जनमानस सरलता से समझ सके और उस से लाभान्वित हो सके। इसीलिए उन्होंने अपनी रचनाओं को देसी भाषाओं में रचने का निर्णय किया। उनका कहना था कि "देसिल बयना सबजन मिट्ठा"। उन्होंने उस समय के राजवंश, उसकी आर्थिक, राजनैतिक इत्यादि व्यवस्था के साथ-साथ जनसाधारण के परिपेक्ष्य में भी अपनी रचनाएँ की जिसमें उन्होंने 'देसिल बयना' के भाव का विशेष ध्यान रखा।

साहित्य में देसिल रचना का समावेश :--

बारहवीं शताब्दी के महाकवि जयदेव ने 'गीत गोविंद' रचकर अपनी ललित पदावली से शास्त्रीय संगीत, नृत्य आदि पर आधिपत्य किया था। विद्यापति ने गीत-गोविंद में पदों के अनुरूप लोकभाषा में पदों की रचना की जिससे उन्हें 'अभिनव जयदेव' भी कहा गया। विद्यापति की रचना में ब्याह- गीत 'बटगवनी, नचारी आदि देसिल बयना का ही सम्मिश्रण है।इनकी रचनाओं में राधा-कृष्ण तथा शिव-पार्वती को विशेष स्थान प्राप्त है।

'देसिल बयना' शब्द की सार्थकता इससे भी स्पष्ट होती है कि न केवल विद्यापति, अपितु इनके बाद विराट लोक-आधार पाने वाले परवर्ती कवि 'गोस्वामी तुलसीदास' ने भी अपने रचना का माध्यम क्षेत्रीय भाषा अवधी को ही बनाया। श्रीरामचरितमानस , दोहावली , कवितावली आदि इनकी महान रचनायेँ हैं। इस संदर्भ में भी यह कहना यथोचित ही है क्योंकि उन्होंने इस महाग्रन्थ की रचना का प्रयास संस्कृत भाषा में करना चाहा था , किन्तु ऐसी मान्यता है कि रात को वे अपनी रचना तैयार करते और सुबह लुप्त पाते। फिर एक दिन स्वयं महादेव ने उन्हें स्वप्न में आकर इस ग्रन्थ को अपनी भाषा मे रचकर जन-जन तक पहुँचाने की प्रेरणा दी। ऐसा भी कहा जाता है कि उनके इस रचना को काशी के विद्वान पंडितों द्वारा मानने से इनकार किया गया तथा इसकी सत्यता को प्रमाणित करने को कहा गया। इसके लिए मंदिर में इनकी रचना को सबसे नीचे रखकर उसपर गीता भागवत इत्यादि को रखा गया और सुबह जब द्वार खुला तो तुलसीदास की रचना सबसे ऊपर पायी गयी। यह घटना इस तथ्य को दर्शाता है कि देसी रचना को ईश्वरीय कृपा भी प्राप्त होती है। अर्थात ईश्वर भी चाहता है कि महान रचनाकारों की रचनाओं को जन-जन तक पहुंचाया जा सके और उनमें विचार परिवर्तन लाया जा सके, क्योंकि किसी भी परिदृश्य या युग में विचार द्वारा ही परिवर्तन संभव है।

संस्कृत के विद्वान होते हुए भी यदि विद्यापति लोकभाषा मे रचना कर्म की ओर प्रवृत हुए तो वह मिथिला के पवित्र माटी का ही प्रताप है। यही वह भूमि है जहाँ जगतमाता सीता ने जन्म लिया था। भूमि से उत्पन्न होने के कारण इनका एक नाम भूमिजा भी है। गोस्वामी जी इनके ससुराल की भाषा को अपनी रचना का आधार बनाया था।

विद्यापति का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब सम्पूर्ण उत्तरभारत राजनैतिक दृष्टि से शक्तिहीन,सामाजिक दृष्टि से विपर्यस्त, आर्थिक दृष्टि से पंगु और नैतिक दृष्टि से लुंजपुंज हो गया था। स्वयं विद्यापति ने अपनी "कीर्तिलता" मे इस अपकर्ष का मार्मिक वर्णन किया है। अनुमानतः 1360 ई॰ मे मिथिला के विसपी(विसफी) गाँव में इनका जन्म हुआ था। पिता गणपति ठाकुर, राजा गगनेश्वर ठाकुर के राजपुरोहित थे। इसलिए विद्यापति का राजदरबार मे आना जाना होता था। राजा कीर्ति सिंह के दरबार मे रहकर इनका साहित्य सृजन का कार्य आरंभ हुआ। राजा शिवसिंह के समय विद्यापति की रचना को एक नया मोड़ मिला। प्रेमी और गुणी राजा शिवसिंह और उनकी प्रियतमा लखिमा देवी के रूप सौन्दर्य का सानिध्य पाकर विद्यापति शृंगार गीत रचने के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने अपनी रचना में शिवसिंह को कृष्ण एवं लखिमा देवी को राधा की छवि देकर अपनी रचना को प्रेम और शृंगार रस से अलंकृत किया है। किन्तु दुर्भाग्यवश तीन वर्ष के शाषन के पश्चात ही यवनों के साथ युद्ध में शिवसिंह का निधन हो गया था।

महाकवि विद्यापति ने अवहट में राजा शिवसिंह के शौर्य व ऐश्वर्य को अपनी रचना 'कीर्तिलता' और 'कीर्ति पताका' में दर्शाया है। उनकी इसी रचना नें उन्हें वीरगाथा काल के अन्य महाकवियों की पंक्ति में खड़ा करती है। आज भी मिथिला के समाज के हर वर्ग में व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक काव्य अभिव्यक्ति का माध्यम इनके पद रहे है। राधा - कृष्ण परक शृंगार गीतों के अलावा महेशवानी, नचारी, दुर्गा स्तुति, गंगा स्तुति, आदि की रचना की। उनकी इसी भावना ने उनके जन्म , उनके नाम को एक पर्व के रूप में मनाने को उत्प्रेरित किया जिसे आज भी 'विद्यापति पर्व' के रूप मे मनाया जाता है। विद्यापति का अवसान कार्तिक धवल त्रयोदशी के दिन हुआ था और दो दिन बाद पूर्णमासी पड़ती है, जिन तीन दिनों का विद्यापति पर्व मनाया जाता है।

इनकी इसी भावना से स्वयं महादेव भी अपने आप को विद्यापति से दूर नहीं रख पाये और 'उगना' रूप में उनके अनुचर बनकर रहने लगें। यद्यपि इस संदर्भ में ऐसी भी धारणा है की एक बार विद्यापति तप्ति रेत में प्यास से बेचैन होने पर उगना द्वारा जल दिये जाने पर विद्यापति पहचान गए की यह जल कोई साधारण नीर नही अपितु स्वयं महादेव के जटा से निकली गंगाजल है और इस घटना ने विद्यापति के समक्ष उगना के वास्तविक स्वरूप को प्रकट कर दिया। यही कारण है कि एक बार विद्यापति द्वारा अपनी पत्नी के समक्ष उगना के वास्तविक स्वरूप के परिचय देते ही महादेव अंतर्ध्यान हो गए जिससे विद्यापति व्याकुल होकर कहने लगे –

उगना रे मोर कतए गेला।

कतए गेला शिव कदहूँ भेला।।

भांग नहीं बटुआ रूसि वैस लाह।

जेहि हेरि आनि देल हंसि उठलाह।।

विद्यापति नें 'शिव-पार्वती विवाह गीत' तथा 'राधा-कृष्ण प्रेम वर्णन' के द्वारा उस समय की धार्मिक भावनाओं को स्पष्ट किया है। लोगों नें इन रचनाओं को अपने परंपरा मे शामिल कर के अपने भागवत प्रेम को दर्शाया।

इस प्रकार विद्यापतिकालीन समाज का दर्पण उनके द्वारा रचित साहित्य था। उसी दौरान और भी बहुत से कवि एवं लेखक हुए जिनसे समाज की वस्तुस्थिति को देखा जा सकता है। जैसे गोस्वामी तुलसीदास, कालीदास, आदि। निश्चित रूप से यह कहना की कोई अतिश्योक्ति नही होगी की 'साहित्य , समाज का दर्पण होता है '।

संदर्भ - सूची :--

1. डॉ. बजरंग वर्मा , "विद्यापति दर्शन" , पृष्ठ - 58 ।
2. डॉ. उमेश मिश्र , "विद्यापति ठाकुर " ।
3. विद्यापति , "कीर्तिलता" , प्रथम पल्लव ।
4. राधा कृष्ण चौधरी , "विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन" ।
5. विद्यापति , "विभाग सार" ।
6. गोस्वामी तुलसीदास , "श्री राम चरित्र मानस" ।
7. डॉ. शिव प्रताप सिंह , "विद्यापति" ।
8. उपेंद्र ठाकुर , "मिथिला का इतिहास" ।
9. डॉ. राम प्रकाश शर्मा , "हिसटरि ऑफ मिथिला" ।
10. रस बिहारी लाल दस , "मिथिला दर्पण" ।
11. डॉ. शिवपुरी सिंह , "विद्यापति" ।
12. नरेंद्र दास , "विद्यापति काव्य लोक" ।
13. रामकृष्ण मिशन , "कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया" ।